MJ-1004

B.A. (Part-I)

Term End Examination, March-April, 2022

HINDI LITERATURE

Paper - I

प्राचीन हिन्दी काव्य

Time : Three Hours] [*Maximum Marks* : 75

[*Minimum Pass Marks* : 25

नोट : **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्नों के अंक उनके दाहिनी ओर अंकित हैं। अशुद्ध एवं अनर्गल लेखन पर अंक काटे जाएंगें। एक प्रश्न के सभी खण्डों का उत्तर एक ही स्थान पर निरन्तरता बनाए हुए लिखिए। उत्तर की समाप्ति पर समाप्ति सूचक चिह्न का प्रयोग करें।

---

1. निम्नलिखित पद्यांशों का सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7×3

(क) दीपक दिया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहूणाँ, बहुरि न आवौं हट्ट॥

सब रंग तंत, रबाब तन, बिरह बजावै नित्त।
और ना कोई सुन सकै, के साईं की चित्त॥

अथवा

पूस जाड़ थर-थर तन काँपा।
सुरुज जाइ लंका दिसि चाँपा॥
बिरह बाढ़, दारुन भा सीऊ।
कँपि-कँपि मरौं, लेइ हरि जीऊ॥
कंत कहाँ लागौं ओहि हियरे।
पंथ अपार, सूझ नहिं नियरे॥
सौंर सपेती आवै जूड़ी।
जानहु सेज हिवंचल बूड़ी॥

(ख) हमसों कहत कौन की बातें?
सुनि ऊधो! हम समझत नाहीं, फिरि पूँछति हैं तातें॥
को नृप भयो कंस किन मार्‌यो को वसुधौ सुत आहि?
यहाँ हमारे परम मनोहर जीजतु हैं मुख चाहि॥
दिन प्रति जात सहज गोचारन गोप सखा लै संग।
बासरगत रजनीमुख आवत करत नयन-गति पंग॥

को व्यापक पूरन अविनासी, को विधि-वेद-अपार।
सूर वृथा बकवाद करत हौं या ब्रज नन्दकुमार॥

अथवा

प्रबिसि नगर कीजै सब काजा।
हृदयँ राखि कौसलपुर राजा॥
गरल सुधा रिपु करहिं मिताई।
गोपद सिंधु अनल सितलाई॥
गरुड़ सुमेरु रेनू सम ताही।
राम कृपा करि चितवा जाही॥
अति लघु रूप धरेउ हनुमाना।
पैठा नगर सुमिरि भगवाना॥
मंदिर मंदिर प्रति करि सोधा।
देखे जहँ तहँ अगनित जोधा॥
गयउ दसानन मंदिर माहीं।
अति बिचित्र कहि जात सो नाहीं॥
सयन किए देखा कपि तेही।
मंदिर महुँ न दीखि बैदेही॥

भवन एक पुनि दीख सुहावा।
हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा॥
रामनाम अंकित गृह सोभा।
बरनि न जाय देखि मन मोहा॥
राम नाम अंकित गृह, सोभा बरनि न जाइ।
नव तुलसिका बृंद तहँ देखि हरषि कपिराइ॥

(ग) झलकैं अति सुन्दर आनन गौर, छके दृग राजत कानन छवै।
हँसि बोलनि मैं छवि फूलन की बरषा, उर ऊपर जाति है ह्वै॥
लटलोट कपोल कलोल करै, कल कंठ बनी जलजावलि द्वै।
अंग अंग तरंग उठै दुति की, परिहै मनौ रूप अवै घर च्वै॥

अथवा

भोर तें साँझ लौं कानन ओर निहारति बावरी नेकु न हारति।
साँझ तें भोर लौं तारनि ताकिबो तारनि सों इकतार न टारति॥
जौ कहूँ भावतो दीठि परै घनआनँद आँसुनि औसर गारति।
मोहन-सोहन जोहन की लगियै रहै आँखिन के उर आरति॥

2. कबीर सच्चे अर्थों में समाज सुधारक थे, सोदाहरण समझाइए। 12

अथवा

जायसी के प्रेमतत्व की विवेचना कीजिए।

3. सिद्ध कीजिए की तुलसीदास सच्चे अर्थों में लोकनायक कवि थे। 12

अथवा

'घनानन्द' प्रेम की पीर के कवि हैं। कथन की सुविचारित विवेचना कीजिए।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 5×3

(*i*) विद्यापति के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर टिप्पणी लिखिए।

(*ii*) रहीम का जीवन परिचय लिखिए।

(*iii*) रसखान की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

(*iv*) सगुण भक्ति की विशेषताएँ लिखिए।

(*v*) प्राचीन हिन्दी काव्य की पृष्ठभूमि पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **पंद्रह** वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×15

(*i*) वात्सल्य रस का **सम्राट** किसे कहते हैं ?

(*ii*) **ज्ञानमार्गी** शाखा के **प्रमुख** कवि कौन हैं ?

(*iii*) दास्यभाव की **भक्ति** किस कवि ने की है ?

(*iv*) जायसी किस **शाखा** के कवि हैं ?

(*v*) '**पदमावत**' किस भाषा में रचित है ?

(*vi*) तुलसीदास कृत रामचरितमानस में कितने काण्ड हैं ?

(*vii*) घनानन्द की **प्रेयसी** का नाम क्या था ?

(*viii*) रसखान **किस काल** के कवि हैं ?

(*ix*) रहीम **का पूरा नाम** क्या है ?

(*x*) विद्यापति **की प्रमुख** रचनाओं के नाम लिखिए।

(*xi*) सूरदास ने किस भाषा में रचना की ?

(*xii*) 'आखिरी **कलाम**' **किसकी** रचना है ?

(*xiii*) किस **कवि को मैथिल** कोकिल कहा जाता है ?

(*xiv*) समन्वयवादी कवि किसे माना गया है ?

(*xv*) आपकी पाठ्यपुस्तक में 'रामचरितमानस' का कौन सा काण्ड संकलित है ?

(*xvi*) गोस्वामी विट्ठलदास किस कवि के गुरु थे ?

(*xvii*) एक पुष्टिमार्गीय कवि का नाम लिखिए।

MJ-1005

B.A. (Part-I)

Term End Examination, March-April, 2022

HINDI LITERATURE

Paper - II

हिन्दी कथा साहित्य

Time : Three Hours] [*Maximum Marks* : 75

[*Minimum Pass Marks* : 25

नोट : **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्नों के अंक उनके दाहिनी ओर अंकित हैं।

---

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7×3

(क) "रुदन में कितना उल्लास, कितनी शांति, कितना बल है। जो कभी एकांत में बैठकर, किसी की स्मृति में, किसी के वियोग में, सिसक-सिसक और बिलख-बिलख कर नहीं रोया, वह जीवन के ऐसे सुख से वंचित है,

---

जिस पर सैकड़ों हँसियाँ न्यौछावर है। उस मीठी वेदना का आनन्द उन्हीं से पूछो, जिन्होंने यह सौभाग्य प्राप्त किया है। हँसी के बाद मन खिन्न हो जाता है, आत्मा क्षुब्ध हो जाती है। मानो हम थक गए हों, पराभूत हो गए हों। रुदन के पश्चात् एक नवीन स्फूर्ति, एक नवीन जीवन, एक नवीन उत्साह का अनुभव होता है।''

अथवा

''गहनों का मर्ज़ न जाने इस दरिद्र-देश में कैसे फैल गया। जिन लोगों के भोजन का ठिकाना नहीं, वे भी गहनों के पीछे प्राण देते हैं। हर साल अरबों रुपये केवल सोना-चाँदी खरीदने में व्यय हो जाते हैं। संसार के और किसी देश में इन धातुओं की इतनी खपत नहीं। तो क्या बात है? उन्नत देशों में धन व्यापार में लगता है, जिससे लोगों की परवरिश होती है, और धन बढ़ता है। यहाँ धन! शृंगार में खर्च होता है; उसमें उन्नति और उपकार की जो महान शक्तियाँ हैं, उन दोनों ही का अंत हो जाता है। बस समझ लो कि जिस देश के लोग जितने ही मूर्ख होंगे, वहाँ जेवरों का प्रचार भी उतना ही अधिक होगा।''

(Continued)

(ख) ''आपत्ति-सूचक तूर्य बजने लगा। सब सावधान होने लगे। बन्दी युवक उसी तरह पड़ा रहा। किसी ने रस्सी पकड़ी, कोई पोत खोल रहा था पर युवक बन्दी ढुलककर उस रज्जू के पास पहुँचा जो पोत से संलग्न थी। तारे ढँक गये। तरंगें उद्वेलित हुई, समुद्र गरजने लगा। भीषण आँधी पिचाशिनी के समान नाव को अपने हाथों में लेकर कन्दुक-क्रीड़ा और अट्टहा करने लगी।''

अथवा

''जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से कुछ बहुत अच्छी न थी और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा सम्पन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी। हम तो कहेंगे, घीसू किसानों से कहीं ज्यादा विचारवान था और किसानों के विचार शून्य समूह में शामिल होने के बदले बैठकबाजों की कुत्सित मंडली में जा मिला था।''

(Turn Over)

(ग) "एक कामयाबी पार्टी वह है जिसमें, ड्रिंक कामयाबी से चल जाय। शामनाथ की पार्टी सफलता के शिखर चूमने लगी। वार्तालाप उसी रौ में बह रहा था; जिस रौ में गिलास भरे जा रहे थे। कहीं कोई रुकावट न थी, कोई अड़चन न थी। साहब को व्हीस्की पसंद आयी थी। मेमसाहब को पर्दे पसंद आये थे। सोफा-कवर का डिजाइन पसंद आया था, कमरे की सजावट पसंद आयी थी। उससे बढ़कर क्या चाहिए।"

अथवा

"उस दावत की चर्चा वाहिद पिछले कई दिनों से सफिया से सुन रहा था। मुनीर साहब की पत्नी ने, जो अक्सर वाहिद के यहाँ दोपहर में आ जाया करती थीं, दो सप्ताह पहले ही अपने यहाँ होने वाली दावत की घोषणा कर दी थी। जब कभी सफिया से भेंट हुई, थोड़ी इधर-उधर की चर्चा के पश्चात् बात ग्यारहवीं शरीफ के महीने, मीलादों और दावतों पर पलट आई और उसने बातों-ही बातों में कई बार सुनाया कि उनके यहाँ की दावत में कितने मन का पुलाव, कितना जर्दा और कितने बकरे कटने को हैं और इतने दिन पहले ही उनके रिश्तेदार चावल-दाल चुनने-बीनने और दूसरे कामों के लिए आ गए हैं।"

2. 'गबन' उपन्यास में वर्णित विभिन्न समस्याओं को स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

'गबन' एक आदर्शोन्मुख यथार्थवाद उपन्यास है। स्पष्ट कीजिए।

3. 'कफ़न' कहानी के आधार पर प्रेमचन्द की कथात्मक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 12

अथवा

'परदा' कहानी के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 15

(*i*) हिन्दी कहानी का विकास

(*ii*) उपेन्द्रनाथ अश्क के कृतित्व

(*iii*) शिवानी के कथा साहित्य

(*iv*) 'ठेस' कहानी का उद्देश्य

(*v*) 'गदल' कहानी का सारांश

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **पन्द्रह** प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 15

(*i*) 'जालपा' के पिता का नाम क्या है ?

(*ii*) कहानी में 'स्थान, कार्य और समय' की एकता को किस नाम से जानते हैं ?

(*iii*) 'गद्य का प्रथम उत्थान' किस युग से प्रारंभ हुआ ?

(*iv*) ''ठगिनी क्यों नैना झमकावे! ठगिनी!'' यह पंक्ति किस कहानी की है ?

(*v*) 'सिरचन' किस कहानी का पात्र है ?

(*vi*) 'शिवानी' का जन्मस्थान बताइए।

(*vii*) 'पंचामृत' पुस्तक के लेखक कौन हैं ?

(*viii*) आँचलिक उपन्यासकार का क्या नाम है ?

(*ix*) 'जली हुई रस्सी' कहानी के किसी एक स्त्री पात्र का नाम बताइए।

(*x*) 'निहाल' के कितने बहनें थीं ?

(*xi*) 'चीफ़ की दावत' कहानी किसने लिखी है ?

(*xii*) 'देवीदीन' किस शहर में रहता है ?

(*xiii*) 'एक टोकनी भर मिट्टी' कहानी के लेखक कौन हैं ?

(*xiv*) चौधरी पीरबख्श के दादा क्या करते थे ?

(*xv*) 'मलबे का मालिक' कहानी किसने लिखी है ?

(*xvi*) इस प्रश्न-पत्र का क्या नाम है ?